सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का एकादश पुष्प आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा आयोजित किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री का 'उपनिषद् वाङ्मय' नामक लेख सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में उद्दृत उपनिषदों के नामों का संग्रह है। यह अतिमहत्त्वपूर्ण व अनुसंधानात्मक लेख है। द्वितीय शोध लेख महामनीषी पं. अनन्त शर्मा जी का है जो 'शास्त्रीय अल्पज्ञता के रोचक उदाहरण' को प्रस्तुत करता है, इस लेख में व्याकरण शास्त्रीय परम्परा से शुद्धौच्चरण पर बल दिया गया है। तृतीय लेख के रूप में डॉ. प्रवीण पण्ड्या जी ने 'शरद पूर्णिमा के महा ऋक्ष - महर्षि वाल्मीकि' का संबंध व वाल्मीकि रामायण के शास्त्रीय उदाहरणों के माध्यम से शरद् पूर्णिमा का महत्त्व प्रस्तुत किया है। आगामी लेख डॉ. देवेन्द्र शर्मा द्वारा महाकवि कालीदास विरचित 'विक्रमोर्वशीये जीवनमूल्यानि' नाटक में समाहित जीवन मूल्यों का निदर्शन है तत्पश्चात् 'शरद् पूर्णिमा' जिसे कोजागिरी पूर्णिमा के नामकरण व महत्त्व पर अभिषेक कुमार मिश्रा ने अपना स्वअनुसंधान प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् डॉ. दयाराम स्वामी ने 'श्री दादूदर्शन' नामक लेख में श्रीमद् दादूवाणी की साखियों का भाव प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् डॉ. रामदेव साहू द्वारा पण्डित मधुसूदन ओझा के वाङ्मय का अनुशीलन कर नवीन खगोल शास्त्रीय अनुसंधान इस लेख में प्रस्तुत किया है। अन्तिम लेख के रूप में श्रीमती शशिप्रभा स्वामी ने हमारे 'इतिहास में ज्योतिष के महत्त्व' को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है जो प्रेरणादायी है।

आशा है सुधी पाठक इन्हें रूचिपूर्व हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा